70 Hazaar Jadugar (Hindi)

70 हज़ार जादूगर

सफ़हात 18

- अल्लाह पाक चाहता तो किसी को भूक न लगती 06
- बादशाह से उलझने वाला फ़क़ीर 08
- मिक़्नातीस लोहे को क्यूं खींचता है ? 11

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अर्ज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افۡتَحۡ عَلَیۡنَا حِکۡمَتَکَ وَانۡشُرۡ
عَلَیۡنَا رَحۡمَتَکَ یَا ذَاالۡجَلَالِ وَالۡاِکۡرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

---

70 हज़ार जादूगर

येह रिसाला (**70** हज़ार जादूगर)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की

मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़मून ''कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब'' के सफ़हा 141 ता 158 से लिया गया है।

70 हज़ार जादूगर

दुआए अ़त्तार

या अल्लाह पाक ! जो कोई 18 सफ़हात का रिसाला ''**70** हज़ार जादूगर'' पढ़ या सुन ले उसे और उस की आल को हमेशा जादू और शरीर जिन्नात के अस्रात से महफ़ूज़ फ़रमा। اٰمِین

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ के बा'द हम्दो सना और **दुरूद शरीफ़** पढ़ने वाले से फ़रमाया : ''दुआ मांग, क़बूल की जाएगी, सुवाल कर, दिया जाएगा।''

(سُنَنُ النَّسائی ص ۲۲۰ حدیث ۲۲۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिराज़ के बारे में सुवाल जवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिराज़ करना कैसा ?

सुवाल : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** करना कैसा ?

जवाब : क़त्ई कुफ़्र है और मो'तरिज़ **काफ़िर व मुरतद**।

अल्लाह पर ए'तिराज़ करना क्यूं कुफ़्र है ?

सुवाल : येह भी वज़ाह़त कर दीजिये कि आख़िर **ए'तिराज़** करना क्यूं **कुफ़्र** है ?

जवाब : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** से बचने का शरीअ़त में हुक्म है और हर मुसल्मान का हुक्मे शरीअ़त के आगे सरे तस्लीम ख़म है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ालिक़ो मालिक है, उसी عَزَّوَجَلَّ के पैदा कर्दा बन्दे का उस عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** करना उस عَزَّوَجَلَّ की शदीद तरीन तौहीन है। مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अगर ए'तिराज़ की इजाज़त दे दी जाए तो फिर जिस की समझ में जो कुछ आएगा वोह कहता फिरेगा कि मसलन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़ुलां काम क्यूं किया ? फ़ुलां काम क्यूं नहीं किया ? इस को यूं नहीं और यूं करना चाहिये था वग़ैरा वग़ैरा। अगर अ़क़्लन भी देखा जाए तो **ए'तिराज़** करना ग़लत़ ही है क्यूं कि **ए'तिराज़** उस पर क़ाइम होता है जिस में कोई ख़ामी हो या जो ग़लतियां या ग़लत़ फ़ैसले वग़ैरा करता हो जब कि रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की ज़ाते सितूदा सिफ़ात हर त़रह़ की ख़ामी व ख़त़ा से पाक है। हां येह बात जुदा है कि नाक़िसुल अ़क़्ल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

बन्दा बा'ज़ बातों की मस्लहतें न समझ पाए। बहर हाल मुसलमान को चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हर काम को मब्नी बर हिक्मत ही यक़ीन करे ख़्वाह उस की अपनी अक़्ल में आए या न आए। ज़बान पर आना कुजा दिल में भी **ए'तिराज़** को जगह न दे। इस ज़िम्न में **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** जिल्द 29 में मौजूद एक तफ़्सीली फ़तवे से सुर्ख़ियों और अपनी बिसात भर तस्हील[(1)] के साथ इक्तिबास पेश करने की सआदत हासिल करता हूं "**ए'तिराज़ करना क्यूं कुफ़्र है?**" इस का जवाब اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बहुत अच्छी तरह समझ में आ जाएगा चुनान्चे **मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिद्अत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़रमाते हैं :**

(1) सहल करना, आसान करना।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

सत्तर हज़ार जादूगर सज्दे में गिर गए !

"इब्ने जरीर" ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत किया कि जब सय्यिदुना मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को **मौला** عَزَّوَجَلَّ ने रसूल कर के फ़िरऔन की त़रफ़ भेजा, मूसा عَلَيْهِ السَّلَام चले तो निदा हुई, मगर **ऐ मूसा !** फ़िरऔन ईमान न लाएगा। मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने दिल में कहा **:** फिर मेरे जाने से क्या फ़ाएदा है ? इस पर बारह[12] उ़लमाए मलाइकए उ़ज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ السَّلَام ने कहा **: ऐ मूसा !** आप को जहां का हुक्म है जाइये, येह वोह राज़ है कि बा वस्फ़े कोशिश (या'नी कोशिश के बा वुजूद) आज तक हम पर भी न खुला।

और आख़िर नफ़्ए़ बिअ़्सत (या'नी रसूल के भेजने का फ़ाएदा) सब ने देख लिया कि दुश्मनाने ख़ुदा हलाक हुए, दोस्ताने ख़ुदा ने उन की (या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की) गुलामी इख़्तियार कर के अ़ज़ाब से नजात पाई। एक जल्से में **सत्तर हज़ार साहिर सज्दे में गिर गए** और एक ज़बान बोले **:**

اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۲۱﴾ رَبِّ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾
(پ۹ الاعراف ۱۲۱،۱۲۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हम ईमान लाए जहान के रब पर, जो रब है मूसा और हारून का।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **Allah** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

दर्से अ़त्तार : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मा'सूम होते हैं वोह हरगिज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** नहीं करते । सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दिल में ख़याल आना **مَعَاذَ اللّٰه** عَزَّوَجَلَّ बर बिनाए **ए'तिराज़** नहीं ह़िक्मत पर ग़ौर करते हुए था, और आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को **ह़िक्मत** कानों से सुनाने बताने के बजाए आंखों से दिखाने की तरकीब फ़रमाई गई और वोह येह कि **फ़िरऔ़न** चूंकि शक़िय्ये अज़ली (या'नी हमेशा के लिये बद बख़्त) था इस लिये ईमान न लाया मगर आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के उस अज़ली काफ़िर के पास **नेकी की दा'वत** देने का सवाब कमाने के लिये तशरीफ़ ले जाने की बरकत से 70 हज़ार जादूगर ईमान ले आए ।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن मज़ीद फ़रमाते हैं : **मौला** عَزَّوَجَلَّ क़ादिर था और है कि बे किसी **नबी** (और आस्मानी) **किताब** के तमाम जहान को एक आन में हिदायत (इनायत) फ़रमा दे ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۳۵﴾

(پ۷الانعام ۳۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) चाहता तो उन्हें हिदायत पर इकट्ठा कर देता तो ऐ सुनने वाले तू हरगिज़ नादान न बन।

अल्लाह चाहता तो किसी को भूक ही न लगती

मगर उस ने दुन्या को आ़लमे अस्बाब बनाया और हर ने'मत में अपनी हिक्मते बालिग़ा के मुताबिक़ मुख़्तलिफ़ हिस्सा रखा है । वोह चाहता तो इन्सान वग़ैरा जानदारों को भूक ही न लगती, या भूके होते तो किसी का सिर्फ़ नामे पाक लेने से, किसी का हवा सूंघने से पेट भरता । ज़मीन जोतने (या'नी हल चलाने) से रोटी पकाने तक जो सख़्त मशक़्क़तें पड़ती हैं किसी को न होतीं । मगर उस (عَزَّوَجَلَّ) ने यूंही चाहा और इस में भी बे शुमार इख़्तिलाफ़ (फ़र्क़) रखा । किसी को इतना दिया कि लाखों पेट उस के दर से पलते हैं और किसी पर उस के अहलो इयाल के साथ तीन तीन फ़ाक़े गुज़रते हैं । ग़रज़ हर चीज़ में,

اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

(پ۲۵الزخرف ۳۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम्हारे रब की रह़मत वोह बांटते हैं? हम ने उन में उन की ज़ीस्त का सामान दुन्या की ज़िन्दगी में बांटा।

की **नैरंगियां** हैं। (मगर) अह़मक़ बद अ़क़्ल, या अज्हले बद दीन (या'नी सख़्त जाहिल गुमराह) वोह उस की नामूस (बारगाहे अ़ज़मत) में चूनो चरा करे कि "यूं क्यूं किया, यूं क्यूं न किया?" सुनता है! उस की शान है :

يَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ

(پ۱۳ابرھیم۲۷)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो चाहे करे।

उस की शान है :

اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ۝۱

(پ٦المائدہ، ۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हुक्म फ़रमाता है जो चाहे।

उस की शान है :

لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ۝۲۳ (پ۱۷الانبیاء۲۳)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उस से नहीं पूछा जाता जो वोह करे और उन सब से सुवाल होगा।

हज़ारों ईंटों की तक़्सीम की बेहतरीन मिसाल

ज़ैद ने रुपै की हज़ार ईंटें ख़रीदीं, पानसो (500) मस्जिद में लगाईं, पानसो पाख़ाने की ज़मीन और क़दम्चों[1] में। क्या उस से कोई उलझ सकता है कि एक हाथ की बनाई हुई, एक मिट्टी से बनी हुई, एक आवे (भट्टी) से पकी हुई, एक रुपै की मोल ली (या'नी ख़रीदी) हुई हज़ार ईंटें थीं, उन पानसो में क्या ख़ूबी थी कि मस्जिद में सर्फ़ (इस्ति'माल) कीं ? और उन में क्या ऐब था कि जाए नजासत (नजासत ख़ाने) में रखीं। अगर कोई अह़मक़ उस (अपने पल्ले से ईंटें ख़रीद कर लगाने वाले) से पूछे तो वोह येही कहेगा कि मेरी मिल्क थीं मैं ने जो चाहा किया।

बादशाह से उलझने वाले फ़क़ीर को कोई अ़क़्लमन्द नहीं कहता

जब मजाज़ी (ग़ैरे ह़क़ीक़ी) झूटी मिल्क का येह ह़ाल है तो ह़क़ीक़ी सच्ची मिल्क का क्या पूछना ! हमारा और हमारी जान व माल और तमाम जहां का वोह एक अकेला पाक निराला सच्चा मालिक है। उस के काम,

(1) W.C. या खुड्डी के पाए। जिस पर पाउं रख कर क़ज़ाए ह़ाजत के लिये बैठते हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्हो शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

उस के अह़काम में किसी को मजाले दम ज़दन (दम मारने की जुरअत) क्या मा'ना ! क्या कोई उस का हमसर (हम पल्ला) या उस पर अफ़्सर है जो उस से "क्यूं और क्या" कहे ! मालिके अ़लल इत़्लाक़ (या'नी मालिके मुत़्लक़, हर काम का मालिको मुख़्तार) है, बे इश्तिराक है (शिर्कत से पाक), जो चाहा किया और जो चाहे करेगा। ज़लील फ़क़ीर बे हैसिय्यत ह़क़ीर अगर बादशाहे जब्बार से उलझे तो उस का सर खुजाया है, शामत ने घेरा है। उस (बादशाह से उलझने वाले) से हर आ़क़िल (या'नी अ़क़्लमन्द) येही कहेगा : ओ बद अ़क़्ल बे अदब ! अपनी ह़द पर रह। जब यक़ीनन मा'लूम है कि बादशाह कमाले आ़दिल और जमीअ़ कमाले सिफ़ात में यक्ता व कामिल है तो तुझे उस के अह़काम में दख़्ल देने की क्या मजाल !

گدائے خاک نشینی تو حافظا مخروش　　نظامِ مملکتِ خویش خسرواں دانند[1]

(तू ख़ाक नशीन गदागर है ऐ ह़ाफ़िज़ ! शोर मत कर, अपनी सल्त़नत के निज़ाम को बादशाह जानते हैं)

(1) दीवाने ह़ाफ़िज़, स. 258

सेठ तो दाना नोकर पर भी ए'तिराज़ नहीं किया करता

अफ़्सोस ! कि दुन्यवी, मजाज़ी (ग़ैरे ह़क़ीक़ी) झूटे बादशाहों की निस्बत तो आदमी को येह ख़याल हो और **मलिकुल मुलूक** (बादशाहों का बादशाह) बादशाहे ह़क़ीक़ी جَلَّ جَلَالُہٗ के अह़काम में राय ज़नी करे। सलात़ीन तो सलात़ीन अपना बराबर ज़ी बल्कि अपने से भी कम रुत्बा शख़्स बल्कि अपना नोकर या ग़ुलाम (भी) जब किसी सिफ़त का उस्तादे माहिर हो और ख़ुद येह शख़्स (या'नी उस नोकर का सेठ अगर) उस से आगाह नहीं तो उस के अक्सर कामों को हरगिज़ न समझ सकेगा (कि) येह सेठ उतना इदराक (शुऊ़र) ही नहीं रखता। मगर अ़क़्ल से ह़िस्सा है तो (सेठ होने के बा वुजूद) उस (नोकर) पर मो'तरिज़ भी न होगा। जान लेगा कि येह इस काम का उस्ताद व ह़कीम है, मेरा ख़याल वहां तक नहीं पहुंच सकता। ग़रज़ अपनी फ़ह्म (अ़क़्ल) को क़ासिर (नाक़िस) जानेगा न कि उस (नोकर) की ह़िक्मत को। फिर रब्बुल अरबाब, ह़कीमे ह़क़ीक़ी, आ़लिमुस्सिर्रे वल ख़फ़ी عَزَّ جَلَالُہٗ के असरार (या'नी भेदों) में ख़ौज़ (ग़ौर) करना और जो समझ में न आए उस पर मो'तरिज़ होना अगर बे दीनी नहीं (तो) जुनून (या'नी पागल पन) है अगर जुनून नहीं (तो)

बे दीनी है। وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْن। (और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह जो तमाम जहानों का परवर्दगार है)

"मिक़्नात़ीस कुत़्ब तारे की त़रफ़ क्यूं !" येह ए'तिराज़ कोई भी नहीं करता

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं : **ऐ अ़ज़ीज़** ! किसी बात को ह़क़ जानने के लिये उस की ह़क़ीक़त जाननी लाज़िम नहीं होती, दुन्या जानती है कि **मिक़्नात़ीस** लोहे को खींचता है और मिक़्नात़ीसी कुव्वत दिया हुवा लोहा **सितारए कुत़्ब** की त़रफ़ तवज्जोह करता है। (या'नी मिक़्नात़ीस की ख़ासिय्यत येह है कि उस का रुख़ कुत़्ब तारे की त़रफ़ ही रहता है) मगर इस की ह़क़ीक़त व कुन्ह (तह) कोई नहीं बता सकता कि इस ख़ाकी (ज़मीनी) लोहे और उस अफ़्लाकी (आस्मानी) सितारे में कि यहां से **करोड़ों मील दूर** है बाहम क्या उल्फ़त ? और क्यूंकर उसे इस की जिहत (या'नी सम्त) का शुऊ़र (समझ) है ? और एक येही नहीं आ़लम में **हज़ारों ऐसे अ़जाइब** हैं कि बड़े बड़े फ़लासिफ़ा ख़ाक छान कर मर गए और उन की कुन्ह (या'नी तह) न पाई..... फिर इस (न जानने) से उन बातों (या'नी उन हज़ारों अ़जाइबात) का इन्कार नहीं हो

सकता। आदमी अपनी जान ही को (या'नी अपने ही बारे में) बताए (कि) वोह क्या शै है जिसे येह "मैं" कहता है, और क्या चीज़ जब निकल जाती है तो मिट्टी का ढेर बे हिस्सो हरकत रह जाता है !

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 29, स. 293 ता 296)

"अल्लाह ने मेरी क़िस्मत अच्छी नहीं बनाई" कहना कैसा ?

सुवाल : अगर कोई यूं कहे : "मैं बहुत परेशान हूं, पता नहीं, क्या ख़ता मुझ से ऐसी हुई है, जिस की मुझ को सज़ा मिल रही है ! मैं ने देखा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ से बिल्कुल ख़ुश नहीं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी क़िस्मत अभी तक तो ज़रा भी अच्छी नहीं बनाई।" इस बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : येह जुम्ला कि "पता नहीं, क्या ख़ता मुझ से ऐसी हुई है जिस की मुझ को सज़ा मिल रही है" बहुत बुरा है ऐसा हरगिज़ हरगिज़ न कहा जाए क्यूं कि हम गुनाहों से मा'सूम नहीं, हम तो ख़ताओं में सर ता पा डूबे हुए हैं। गुनाहों से **मा'सूम** सिर्फ़ अम्बिया व फ़िरिश्ते

عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं । मदनी मश्वरा है, **फ़ैज़ाने सुन्नत** (जिल्द अव्वल) सफ़हा 1032 ता 1042 का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये। और दूसरा जुम्ला कि ''मैं ने देखा.....(اِلَخ) । इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिराज़ का पहलू नुमायां है जो कि **कुफ़्र** है। और **ए'तिराज़** ही मक़्सूद हो तो **सरीह़ कुफ़्र** है।

''अल्लाह ने मेरे नसीब में परेशानी क्यूं रखी है'' कहना कैसा ?

सुवाल : अल्लाह तआ़ला ने आख़िर मेरे ही नसीब में इतनी परेशानी क्यूं रखी है ? येह जुम्ला कहना कैसा है ?

जवाब : इस जुम्ले में **अल्लाह** तआ़ला पर **ए'तिराज़** का पहलू नुमायां है जो कि **कुफ़्र** है। और **ए'तिराज़** ही मक़्सूद हो तो **सरीह़ कुफ़्र** है।

शह्वत परस्ती भी बुरे ख़ातिमे का सबब है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़बान को क़ाबू में रखना बेह़द ज़रूरी है, कहीं ज़बान की बे एह़तियाती हमेशा के लिये **दोज़ख़** में न झोंक दे। अपने आप को हमेशा गुनाहों से बचाते रहना चाहिये कि गुनाहों

की नुहूसत से ईमान बरबाद होने का ख़त़रा रहता है। **याद रखिये !** शह्वत परस्ती भी **बुरे ख़ातिमे** का एक सबब है लिहाज़ा जिन को ग़ैर औरतों के ख़यालात तंग करें या **अम्रदे ह़सीन** (या'नी पुर कशिश लड़के) से शह्वत के बा वुजूद दोस्ती, नज़्दीकी या उन को लज़्ज़त के साथ देखने, लिपटा लेने, मज़ाक़ मस्ख़री व खींचातानी करने, गले में हाथ डालने की ख़्वाहिश हो वोह इस ह़िकायत को पढ़ लिया करें या ज़ेह्न में दोहरा लिया करें :

दो अम्रद पसन्द मुअज़्ज़िनों की बरबादी

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 472 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''बयानाते अ़त्तारिय्या'' ह़िस्सए दुमुव** सफ़ह़ा 123 ता 127 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद मुअज़्ज़िन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं त़वाफ़े का'बा में मश्ग़ूल था कि एक शख़्स पर नज़र पड़ी जो ग़िलाफ़े का'बा से लिपट कर एक ही दुआ़ की तक्रार कर रहा था : **''या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे दुन्या से मुसल्मान ही रुख़्सत करना।'' मैं ने उस से पूछा : इस के इलावा कोई और दुआ़ क्यूं नहीं मांगते ? उस ने

कहा : मेरे **दो भाई** थे, बड़ा भाई **चालीस साल** तक मस्जिद में बिला मुआ़वज़ा अज़ान देता रहा। जब उस की मौत का वक़्त आया तो उस ने **क़ुरआने पाक** मांगा, हम ने उसे दिया ताकि इस से बरकतें ह़ासिल करे, मगर **क़ुरआन शरीफ़** हाथ में ले कर वोह कहने लगा : "तुम सब गवाह हो जाओ कि मैं क़ुरआन के तमाम ए'तिक़ादात व अह़कामात से बेज़ारी ज़ाहिर करता और **नसरानी** (क्रिस्चेन) मज़्हब इख़्तियार करता हूं।" फिर वोह मर गया। इस के बा'द **दूसरे भाई** ने **तीस बरस तक** मस्जिद में फ़ी सबीलिल्लाह عَزَّوَجَلَّ अज़ान दी। मगर उस ने भी आख़िरी वक़्त **नसरानी** (या'नी क्रिस्चेन) होने का इक़रार किया और मर गया। लिहाज़ा मैं अपने ख़ातिमे के बारे में बेह़द फ़िक्र मन्द हूं और हर वक़्त **ख़ातिमा बिलख़ैर** की दुआ़ मांगता रहता हूं। **ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद मुअ़ज़्ज़िन** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि तुम्हारे **दोनों भाई** आख़िर ऐसा कौन सा गुनाह करते थे? उस ने बताया : **"वोह ग़ैर औ़रतों में दिल चस्पी लेते थे और अम्रदों** (या'नी बे रीश लड़कों) **को** (शह्वत से) **देखते थे।"** (الرَّوضُ الفائق ص١٧)

रिश्तेदार का रिश्तेदार से पर्दा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ज़ब हो गया ! क्या अब भी ग़ैर औ़रतों से बे पर्दगी और बे तकल्लुफ़ी से बाज़ नहीं आएंगे ? क्या अब भी ग़ैर औ़रतों नीज़ अपनी भाभी, चची, ताई, मुमानी (कि येह भी शरअ़न सब ग़ैर औ़रतें ही हैं इन) से अपनी निगाहों को नहीं बचाएंगे ? इसी त़रह़ चचाज़ाद, तायाज़ाद, मामूंज़ाद, फूफीज़ाद और ख़ालाज़ाद का नीज़ बीवी की बहन और बहनोई का आपस में पर्दा है। **ना मह़रम पीर और मुरीदनी** का भी पर्दा है। मुरीदनी अपने ना मह़रम पीर का हाथ नहीं चूम सकती।

अम्रद को शह़वत से देखना ह़राम है

ख़बरदार ! अम्रद (या'नी ख़ूब सूरत लड़का) **तो आग है आग ! शह़वत के बा वुजूद अम्रद** (ख़ूब सूरत लड़के) **का क़ुर्ब, उस की दोस्ती, उस के गले में हाथ डालना उस के साथ मज़ाक़ मस्ख़री, आपस में क़ुश्ती, खींचातानी और लिपटा लिपटी जहन्नम में झोंक सकती है। अम्रद** (ख़ूब सूरत लड़के) से दूर रहने ही में आ़फ़िय्यत है अगर्चे उस बेचारे का कोई

कुसूर नहीं, **अम्रद** होने के सबब उस की दिल आज़ारी भी मत कीजिये, मगर उस से अपने आप को बचाना बेह़द ज़रूरी है। हरगिज़ **अम्रद** को स्कूटर पर अपने पीछे मत बिठाइये, ख़ुद भी उस के पीछे मत बैठिये कि आग आगे हो या पीछे उस की तपश हर सूरत में पहुंचेगी। शह्वत न हो जब भी **अम्रद** से गले मिलना मह़ल्ले फ़ितना (या'नी फ़ितने की जगह) है, और शह्वत होने की सूरत में गले मिलना बल्कि हाथ मिलाना बल्कि **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : **अम्रद की त़रफ़ शह्वत के साथ देखना भी ह़राम है।** (دُرِّمُختار ج۲ص۹۸، تفسیراتِ احمدیہ ص۵۵۹) उस के बदन के हर ह़िस्से ह़त्ता कि लिबास से भी निगाहों को बचाइये। उस के तसव्वुर से अगर शह्वत आती हो तो इस से भी बचिये, उस की तह़रीर या किसी चीज़ से शह्वत भड़क्ती हो तो उस से निस्बत रखने वाली हर चीज़ से नज़र की ह़िफ़ाज़त कीजिये, ह़त्ता कि उस के मकान को भी मत देखिये। अगर उस के वालिद या बड़े भाई वग़ैरा को देखने से उस का तसव्वुर क़ाइम होता है और शह्वत चढ़ती है तो उन को भी मत देखिये।

अम्रद के साथ 70 शैत़ान

अम्रद (ख़ूब सूरत लड़के) के ज़रीए किये जाने वाले शैत़ाने अय्यारो मक्कार के तबाहकार वार से ख़बरदार करते हुए मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है : **औरत के साथ दो शैत़ान होते हैं और अम्रद के साथ सत्तर(70)।**

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 721)

बहर ह़ाल अज्नबिय्या औरत (या'नी जिस से शादी जाइज़ हो) उस से और **अम्रद** (या'नी ह़सीन लड़के) से अपनी आंखों और अपने वुजूद को दूर रखना सख़्त ज़रूरी है वरना अभी आप ने उन **दो भाइयों** की अम्वात के तश्वीश नाक मुआ़मलात पढ़े जो ब ज़ाहिर नेक थे। मेह्रबानी फ़रमा कर **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना का मत़्बूआ़ मुख़्तसर रिसाला **क़ौमे लूत़ की तबाह कारियां** पढ़ लीजिये।

नफ़्से बे लगाम तो गुनाहों पे उक्साता है
तौबा तौबा करने की भी आ़दत होनी चाहिये